

# Teen Shaktiya

Date : 21st January 1975  
Place : Dadar  
Type : Seminar & Meeting  
Speech : Hindi & Marathi  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	02 - 04
Marathi	05 - 05
English	-

### II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

जैसे कि माली बाग लगा देता है, और उस पे प्रेम से सिंचन करता है और उसके बाद देखते रहता है कि बाग में कितने फूल खिले हैं। वो देखने पर जो आनन्द उस माली को आता है उसका क्या वर्णन हो सकता है! कृषि नाम का अर्थ होता है, कृषि से, कृषि आप जानते हैं खेती। कृष्ण के समय में खेती ही थी और ख्रिस्त के समय में इसे फूल से सिंचा गया था। इस संसार की भूमि को कितने ही अवतारों ने पहले संवारा हुआ है। आज कलियुग में ये समय आ गया है कि उस खेती की बहार देखूँ। जिसकी फूलों का सुगन्ध उठायें। वो जो आपके हाथ में से चैतन्य लहरियाँ बह रही हैं ये वही सुगन्ध है, जिसके सहारे सारा संसार, सारी सृष्टि, सारी प्रकृति चल रही है। लेकिन आज आप वो चुने हुये फूल हैं जो युगों से चुने गये हैं कि आज आपकी लहरें और आपके अन्दर की ये सुगन्ध संसार में फैल कर के इस कीचड़ से, इस मायासागर से सारी ही गन्दगी को खत्म कर दे। देखने में ऐसा लगता है कि ये कैसे हो सकता है? माताजी बहुत बड़ी बात कह रही है। लेकिन ये एक सिलसिला है, और जब मंजिल सामने आ गयी तो ये सोचना कि मंजिल क्यों आ गयी? कैसे आ गयी? कैसे हो सकता है? जब आप चल रहे थे तो क्या मंजिल नहीं आयी! जब आप खोज रहे थे तो क्या आपका स्थान मिलेगा नहीं? लेकिन जब वो मिल गया है तो इससे शंका की बात क्यों खड़ी होनी चाहिए।

आज मैं आपको तीन शक्तियों के बारे में बताना चाहती हूँ कि परमेश्वर एक ही है। वो दो नहीं, अनेक है। मैं एक ही हूँ। अनेक नहीं हूँ। लेकिन आपकी माताजी हूँ, मेरे पति की पत्नी हूँ, मेरे बच्चों की माँ हूँ, आपकी अलौकिक माँ हूँ, उनकी लौकिक माँ हूँ। इसी तरह परमात्मा के भी तीन अंदाज हैं, श्री अंसपेक्ट्स। पहले अंदाज से वो साक्षिस्वरूप हैं। वो साक्षी हैं अपने सत्य के खेल से, जिसे वो देखते हैं। जिसे हम ईश्वर कहते हैं। और उनकी शक्ति को हम ईश्वरीय शक्ति कहते हैं या ईश्वरी कहते हैं। हमारे सहजयोग में इसे हम महाकाली की शक्ति कहते हैं। जिस वक्त उनका ये साक्षी स्वरूपत्व खत्म होता है, माने जब वो और कुछ देखना नहीं चाहते, वो नापसन्द करते हैं, जब वो अपनी आँख मूँद लेते हैं अपनी शक्ति के खेल से, उस वक्त सब चीज़ खत्म हो जाती है। इसलिये उस शक्ति को हम लोग संहारक शक्ति कहते हैं। असल में संहारक नहीं है। लेकिन वो सारे संसार के कार्य का नियोजन करती है और उसे खत्म करती है।

दूसरी शक्ति जो परमात्मा उपयोग में लाते हैं, वो है उनकी त्रिगुणात्मक शक्ति, जिससे वो सारे संसार की रचना करते हैं। जिसमें बड़े बड़े ग्रह-तारे होते हैं, जिससे वो पृथ्वी की एक परम पवित्र वस्तु तैयार होती है। इस अवस्था में परमात्मा को हिरण्यगर्भ कहते हैं और उनकी पत्नी को हिरण्यगर्भिणी कहते हैं। हमारे सहजयोग में इसको महासरस्वती कहते हैं।

तिसरी परमात्मा की जो शक्ति है वो विराट् स्वरूप है, विराट् शक्ति है। जिस शक्ति के द्वारा संसार में जीव पैदा होते हैं। उनकी उत्क्रांति याने इवोल्यूशन होता है। जानवर से मानव बनता है और मानव से अति मानव बनता है

और अति मानव से परमात्मा बनता है। इस विराट् शक्ति को सहजयोग में हम लोग महालक्ष्मी कहते हैं।

इस तरह से संसार में तीन शक्तियाँ हैं जो परमेश्वर अपनी आभा को फैलाते हैं। पहली शक्ति जिसे ईश्वरी शक्ति कहलाते हैं, दूसरी हिरण्यगर्भिणी और तिसरी विराटांगना। सहजयोग कार्य जो है वो विराट का कार्य है। मनुष्य के अन्दर भी परमात्मा ने तीनों ही शक्तियाँ दी हैं। एक शक्ति से मनुष्य जो कुछ भी मानता है, (अस्पष्ट) करता है वो महाकाली की शक्ति है। एक शक्ति से भविष्य के लिये वो नियोजन करता है, प्लानिंग करता है, सोचता-विचारता है वो महासरस्वती की शक्ति है। और जिस शक्ति के द्वारा वो उत्क्रान्ति पाता है, इवॉल्व होता है वो महालक्ष्मी की शक्ति है। इन तीनों शक्तियों का मिलाप विराट में, उसके सहस्रार में है। यही अधिकृत है। उसके जैसे मनुष्य को बनाने की पूर्ण व्यवस्था परमेश्वर ने की है। महालक्ष्मी शक्ति प्राणिमात्रों तक तो अपना कार्य सुव्यवस्थित करती है। वो इतने चयन करती है, चॉइस करती है और ठीक लोगों को, ठीक जानवरों को एक हद तक इस (अस्पष्ट) पहुँचा देती है। पर मनुष्य की दशा पर आने पर उसको पूर्णतया स्वतंत्रता मिलती है कि वो अपनी चेतना में, अपनी अवेअरनेस में, अपनी ही उत्क्रान्ति को खोजें और जाने की उसकी उत्क्रान्ति कैसे हो गयी? न तो जानवर अपनी उत्क्रान्ति की बात सोचता है, लेकिन मनुष्य ही ये सोचता है और उसे देखता भी है और जान भी सकता है, जब उसके हाथ से ये वाइब्रेशन्स आने लगते हैं।

मंजिल तो आ गयी है। आप लोग आँगन में आ खड़े हैं। कितना सरल, सहज है सबकुछ, किन्तु मनुष्य ने ही अपने को बड़ा कॉम्प्लिकेटेड कर दिया है, बहुत ही ज़्यादा। मनुष्य के लिये बहुत कठिन हो जाता है। धर्म और कुछ नहीं है सीधा साधा बिल्कुल भोला है। इनोसन्स, लेकिन इतनी खोपडियों के ऊपर खड़े हो कर के इनोसन्स की बात कैसे करें? इसलिये छोटे बच्चे बहुत जल्दी पार हो जाते हैं। क्योंकि उनमें भोलापन है। कलियुग में बहुत सी बातें हो रही हैं। जैसे ही विराट शक्ति बहुत प्रबलित हो चुकी है उसी वक्त में पाताल लोग से यहाँ पर की वेस्ट मटेरिअल जैसे अधोगति को गये हुये बहुत से पुरुष जिनको कि हम लोग राक्षस कहते हैं उनकी ही शक्तियाँ बलवत्तर हो रही हैं। दोनों शक्तियों का मुकाबला हो रहा है। एक शक्ति मृत है और एक शक्ति जीवंत है। ....(अस्पष्ट) कभी भी जीवंत शक्ति से शक्तिशाली नहीं हो सकती। क्योंकि जीवंत शक्ति अत्यंत सेन्सिटिव होती है, संवेदनशील होती है। इसी वजह से उनका पनपना बहुत कठिन है। प्लास्टिक का फूल कभी भी असली फूल से सुन्दर, महत्वपूर्ण नहीं हो सकता है। प्लास्टिक के फूल हजारों बनाये जा सकते हैं, जीवंत फूल दो-चार ही खिलते हैं। इसलिये जो लोग सहजयोग में पनपे हैं, सहजयोग में जिन्होंने जो कुछ पाया है वो लोग भी मुरझा जाते हैं, फिर पनपते हैं, फिर मुरझा जाते हैं। एक माँ जैसे अपने आँचल में अपने बच्चे को बड़े दुलार से सम्भालती है, उसी तरह से सहजयोग पालता है, पोसता है। लेकिन बच्चे भी एक खुद शक्ति है कि अपनी शक्ति को जानें।

सहजयोग के बाद मनुष्य उस दशा तक पहुँच सकता है, इस थोड़े से टाइम में पहुँच सकता है, जिसके लिये बड़े बड़े ऋषि-मुनियों को हजारों जन्म लेने पड़े और हजारों वर्षों की, तपों की, युगों की साधना करनी पड़ी। हम लोगों के परम भाग्य कि हम एक विशेष युग में पैदा हुये हैं। सामान्य ही लोग हैं, असामान्य कार्य के लिये पैदा हुये हैं। असामान्य परदे के पीछे ही है, सब आपकी मदद कर रहे हैं। लेकिन सामान्य को अपने विराट में चुना हुआ है अपने सहस्रार को बढ़ाने क्योंकि सामान्य में शक्ति है असामान्य होने की। किन्तु सहजयोग में सत्य पे विचार है कि

अन्दर में भोलापन होना चाहिये और शान्ति चाहिये। शांति, संतोष है। किसी न किसी को कोई न कोई दुःख है, कोई विशेष परेशानी है, उलझन है। लंडन में एक साहब कहने लगे, 'विएतनाम में इतना युद्ध हो रहा है। आप ये क्या बात कर रहे हैं?' मैंने कहा कि, 'तुम क्या विएतनाम जा रहे हो? वहाँ के प्राइम मिनिस्टर हो? तुमको इतनी क्यों परेशानी? तुम अपने अन्दर का देखो।' छोटी छोटी चीज़ों से अपने मन को भ्रम में ले आते हैं। एक आँख में अगर तिनका भी चला जायें तो आँख खराब हो सकती है। उसका कोई महत्व नहीं है। शांत, देखिये, वो समय आ गया है कि परमेश्वर का राज्य इतना शांत है, संतोष है। सहजयोगियों को पहले अन्य लोगों से ज़्यादा शांत रहना है। संतोष से भरे रहना है और अपने आनन्द से सारे संसार को भरते रहे। अन्दर का चमत्कार सहजयोग दिखायेगा। बहुत जोरों में चर्वण चला है, मंथन चला है।

आप में से कोई लोग नये भी आये हैं यहाँ पर, कोई बहुत पुराने हैं। कोई नये खट् से कहाँ से कहाँ पहुँच जाते हैं और कोई पुराने हैं यहीं बैठे हैं। नितांत परमात्मा की असीम कृपा पर जिसको विश्वास है वो जानता है कि सारी सृष्टि का रचयिता वही है और सबको पार लगाने वाला वही है। वो एक क्षण में ही सहजयोग में पार हो के जम जाता है। और एक बार वो जम जाता है तो कभी भी निकलता नहीं। अपने विश्वास को दृढ़ करो क्योंकि आपके हाथ से वो चीज़ बह रही है। आपने इसके चमत्कार देखे हुये हैं। अपने पर विश्वास करें। अपने को जानें। बहुत कुछ और भी हो रहा है। बहुत से बच्चे, छोटे छोटे बच्चे मैंने देखे हैं जिनमें बहुत बड़े बड़े जीव, जो कि आपके बापदादा ही हैं वो जन्म ले रहे हैं आपकी मदद करने के लिये। १०-१२ साल के अन्दर बहुत बड़े बड़े लोग इस संसार में आ जायेंगे। उनकी स्वागत की तैयारियाँ हो रही हैं। उनको पहले सूली पर चढ़ाया गया था, उनको मारा-पीटा गया था। वो सब आज जन्म लेने वाले हैं। एक नवीन युग संसार में आने वाला है। सारे धर्मों का आशीर्वाद और आशा कि मनुष्य परमात्मा तक पहुँचेगा। हम लोग थोड़ी देर ध्यान में जाएंगे।

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## MARATHI TALK

ते ही अत्यंत दुःखी लोक आहेत. रडत असतात सकाळपासून संध्याकाळपर्यंत. अन्न पचत नाही त्यांना. काय फायदा! जिथे खायला नाही ते रडतात, ज्यांना खायला आहे ते ही रडतात. आत्महत्या करतात. जे आजारी आहे ते रडतात, जे आजारी नाही ते ही रडतात. काय सुरू आहे? सगळा वेडेपणा आहे. मागायचं तर ते मागा जे अस्सल आहे. आम्ही अस्सल द्यायला आलो आहोत. तुम्ही काय नकली गोष्टी मागता आमच्याकडे. तब्येत बरी करून द्या. अमकं ठीक करून द्या. तमकं करून द्या. अरे, होईल ते. त्याचं काय! अस्सल माल घ्या आधी. त्याचे मूल्य नाही. अरे संसारात सगळ्यात महत्त्वपूर्ण तेच आहे. ते मिळाल्याशिवाय आनंदच मिळणार नाही. काहीही बाकी सगळं व्यर्थच ठरतं. आता परिसासारखे जे आहे ते मागा. असे मागणारे असते, तर देणारे आम्ही आहोत इकडे बसलेले, पण आहेत कुठे मागणारे? आईला मागितलं तर विशेषच मागायला पाहिजे. असलं कसलं काय मागायचं! भाडोत्री! सगळी कमाई देऊन टाकू तुम्हाला. मागा तर खरी. सगळी पुण्याई तुमच्यासाठी लावून टाकू पणाला. उभे तर रहा! तुमच्या चरणावर येऊन पडलो तरी तुमच्या लक्षात येणार नाही. ही केवढी तळमळ आतून आहे. समजलं पाहिजे. कळेल का?

ध्यानात जायचे आहे प्रेमाने. सगळे प्रेमाचे खेळ आहेत. अगदी शांतपणे डोळे मिटायचे. काही करायचं नाही. स्वतःचं, जे तुमच्यातलं आहे, ते अगदी वर आहे.